E-Content

Master of Arts (History)

Darbhanga House, Patna University, Patna-800005

Semester-II

Course Code-CC-VI

Course Name: (History of Europe & Modern World 1919-2000)

Unit-IV

वर्साय की संधि-द्वितीय विश्वयुद्ध का मूल कारण

अविनाश कुमार

सहायक प्रोफेसर -इतिहास

पटना कॉलेज, पटना

6202393206 & avinashisavailable@gmail.com

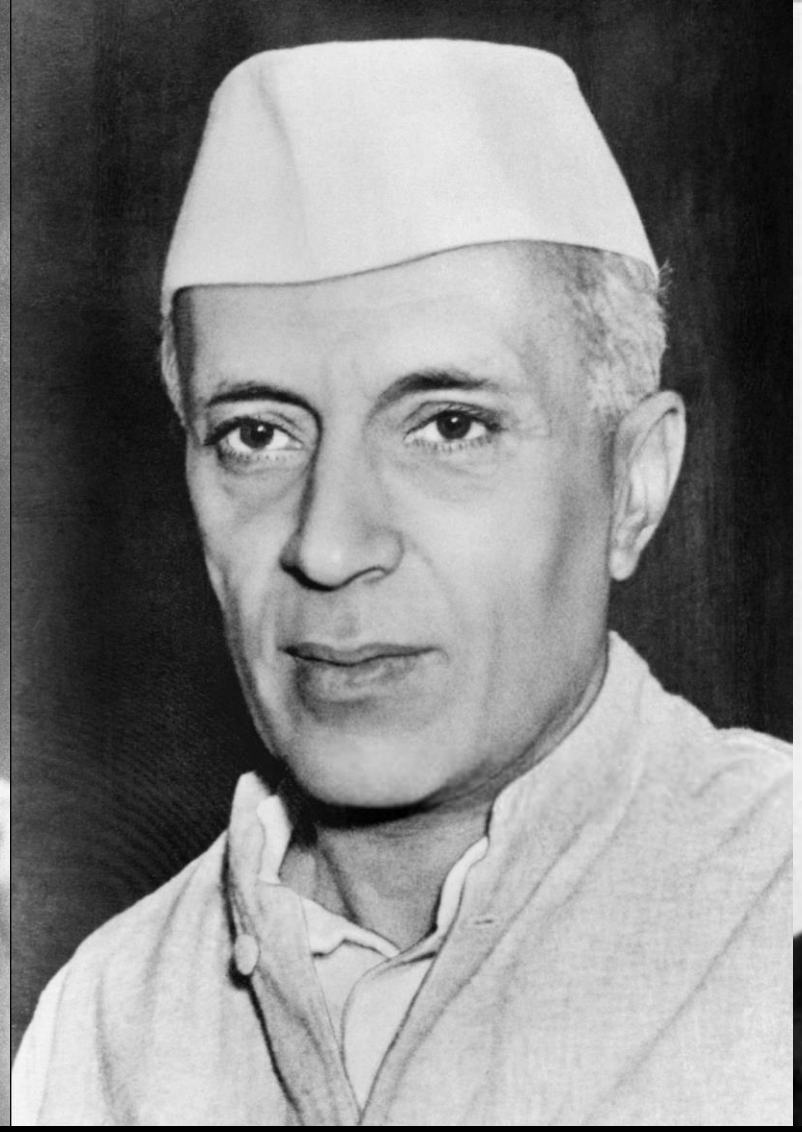

हिटलर(तानाशाह-20 अप्रैल, ऑस्ट्रिया), नेहरू (लोकतान्त्रिक नेता-14 नवंबर, भारत) और चार्ली चैपलिन(जोकर-16 अप्रैल, ब्रिटेन)-तीनों का जन्म एक ही साल 1889 में हुआ था।

- 1889 (चार्ली चैपलिन और जवाहर लाल नेहरू के जन्म का साल) में अप्रैल महीने की 20 तारीख को पैदा होने वाले हिटलर ने 1945 के अप्रैल महीने की अंतिम तिथि को अपने जर्मन शेफर्ड कुत्ते और कुछ देर पहले औपचारिक रूप से विवाहित अपनी प्रेमिका ईवा ब्राउन के साथ मौत को गले लगा लिया। अपने चुनावी अभियानों में कभी उसने कहा था कि ये धरती सब को खैरात में मिली हुई चीज नहीं है। जो राष्ट्र और जाति सबसे शक्तिशाली और काबिल होगी, वही इस पर राज करेगा। जर्मन में अपने देश के बाहर प्रभाव-क्षेत्र के लिए उसने लेबेन्श्रम शब्द का इस्तेमाल किया था। अगर समानता की बात करें तो यह भारतीय ग्रन्थों में वर्णित एक संस्कृत वाक्य-"वीर भोग्या वसुंधरा"- से काफी मेल खाती है। मुट्ठियाँ भींच कर और चेहरे की मांसपेशियों को सख्त कर जब वह अपने प्रदर्शनों में अपनी बात करता था तो उसकी बातों में आकर उसके विरोधियों को भी उसके दैवीय पुरुष हो जाने की गलतफहमी हो जाती थी।

- नौजवान युवा और युवती- चाहे वे जर्मनी के हों या उसके मुख़ालिफ़ ब्रिटेन के (हिटलर की एक प्रेमिका मिटफर्द नाम की ब्रिटिश युवती थी, जिसने वहाँ से भागकर हिटलर से मिलने की बहुत कोशिश की थी) लोग भी उसकी वक्तृत्व कला के मुरीद हो गए थे। अपने बचपन के दिनों में वह काफी ज़हीन छात्र था और उसकी स्मरण-शक्ति काबिल-ए-तारीफ थी। किसी भी देखे गए दृश्य को वह वर्षों बाद हू-ब-हू कागज पर उकेरने में माहिर था। उसकी दिली ख़्वाहिश थी कि वह एक चित्रकार बने। और कलाकार बहुत संजीदे होते हैं, भावुक होते हैं। सख्त मिजाज बाप से लाड़-प्यार न मिलने की वजह से वह लागातार माँ की ओर खिंचता चला गया जिसकी एक ही ख़्वाहिश थी कि उसका बेटा पढ़-लिख कर एक इज्जतदार आदमी बने। अपने पति एलॉयस के असमय मरने के बाद उसने घरेलू नौकरानी का भी काम किया ताकि उसके जीवन के एकमात्र सहारे की पढ़ाई-लिखाई में कोई दिक्कत न हो। इस कोशिश में वह अल्सर की मरीज भी हो गई। बाद में वह ब्रेस्ट कैंसर का भी शिकार बन गई। हिटलर ने माध्यमिक शिक्षा के बाद वियना की आर्ट्स एकेडमी में दाखिले की भरपूर कोशिश की, परंतु सिफ़ारिश न होने की वजह से वह नाकाम रहा। एक बीमार माँ के लिए उसके बेटे की नाकामी एक अभिशाप से कम न थी। कुछ दिनों के बाद वह भी भगवान को प्यारी हो गई।

- अनाथ और असहाय हिटलर को ढाढ़स बंधाने वाला कोई नहीं थे। एक यहूदी लड़की से एकतरफा प्यार में विफल हिटलर बेकार की बातों और नाउम्मीदी से घिरा हुआ था। उस वक्त के ऑस्ट्रिया में (जन्मजात हिटलर जर्मन न होकर ऑस्ट्रियन था) सामंती व्यवस्था ही थी जिसमें सामाजिक पृष्ठभूमि ही भाग्य का निर्णय किया करती थी। सामाजिक पूँजी के नाम पर हिटलर के पास कुछ भी नहीं था। ऐसे में उसने उस क्षेत्र का चुनाव किया जिसमें किसी सिफारिश की जरूरत नहीं थी। बेशक यह क्षेत्र सेना के अलावे कोई हो ही नहीं सकता था। क्योंकि सामाजिक पूँजी में धनवान लोगों के लिए मौत का बहुत बड़ा होता है। लेकिन क्षीणकाय और कपोतवक्षी हिटलर को वहाँ किसी सैनिक अधिकारी की जगह डाकिये का काम मिला। लेकिन प्रथम विश्व-युद्ध के अंत के दिनों में उसे फौजी भूमिका में लड़ने का अवसर मिला और जबर्दस्त प्रदर्शन के बदौलत वह वीरता पुरस्कार-आइरन क्रॉस-जीतने में कामयाब रहा। इस कामयाबी की वह खुशी मनाता, इससे पहले वह क्लोरीन गैस का शिकार हो गया और अपनी आँखों का इलाज करवाने केलिए सैन्य अस्पताल में भर्ती हो गया। रोगी-शय्या पर ही उसने जर्मनी के आत्मसमर्पण की खबर सुनी। वह खून के घूँट पीकर रह गया। उसने मैदान-ए-जंग में सैनिकों के संघर्ष को देखाठा और उसका विश्वास था कि आत्मसमर्पण जर्मन राजनेताओं ने किया था, जर्मन सैनिकों ने नहीं।

- लेकिन वह कुछ ज्यादा कर पाने की हालत में नहीं था। उसने वास्तविकता को समझने की बहुत कोशिश की, लेकिन -पेरिस शांति सम्मेलन में जर्मनी के साथ किए गए वर्साय की संधि की शर्तों और जिस ज़लालत में जर्मन प्रतिनिधियों को उस पर दस्तखत करना पड़ा-दोनों ने उसके सब्र के बांध को तोड़ दिया और वह प्रतिशोध की ज्वाला में धधकता रहा। प्रशियन जमींदारों और सैन्य अधिकारियों के साथ मिलकर उसने नवगठित वाइमर सरकार के खिलाफ कई षड्यंत्र किए, पर बार-बार वह नाकामयाब होता रहा और अंततः जेल में दल दिया गया। जेल में ही उसने अपनी आत्मकथा-मीन कैम्फ़-(मेरा संघर्ष) लिखी। बेहद साफदिल होकर उसने उसमें अपनी पूरी भावी योजना का खुलासा किया। सत्ता मिलने पर वह मीनकैम्फ़ में बताई अपनी योजना से रत्ती भर भी विचलित नहीं हुआ। तानाशाह अपने उद्देश्यों को लेकर बड़े साफ होते हैं- हिटलर इसका अपवाद नहीं था। चर्चिल ने "द्वितीय विश्वयुद्ध की कहानी" नामक अपनी किताब में ये माना है कि मीनकैम्फ़ पढ़नेवाला कोई भी व्यक्ति हिटलर के अगले कदम का सहज ही पूर्वानुमान लगा सकता था।

- महामंदी की शुरुआत में और वाइमर गणतन्त्र द्वारा युद्ध के हरजाने को चुकाने में असमर्थता जताने के बाद एक बार हिटलर ने राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग से अनुरोध किया था कि वे उसे चांसलर बना दें तो जर्मनी की सभी समस्याओं को वह चुटकियों में हल कर देगा। उस समय हिंडेनबर्ग ने उसका मखौल उड़ाते हुए कुटिलता और व्यंग्य के साथ कहा थी कि वे उसे चांसलर तो बहुत दूर की बात रही, डाकिया भी नहीं बनाएँगे। (हिटलर ने अपनी जिंदगी डाकिया के रूप में ही शुरू की थी)। पर इसे किस्मत का खेल कहा जाय या कुछ और, पूर्ण बहुमत न मिलने के बाद भी उसी हिंडेनबर्ग ने हिटलर को चांसलर का पद थाली में परोसा और उसे इस पद की शपथ दिलवाई- 30 जनवरी 1933 को। ध्यातव्य रहे इसी तिथि को पूरे 15 साल बाद गांधी जी की हत्या हुई थी और इसी साल हिटलर के शपथ से 35वीं दिन सर्वाधिक दिनों तक अमरीकी राष्ट्रपति रहे रूजवेल्ट ने अपने पद की शपथ ली थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के जो बादल प्रथम विश्वयुद्ध की भस्मावृत चिंगारी से उठ रहे थे, उसके पटाक्षेप का आगाज हो चुका था।

- मोटे तौर पर द्वितीय विश्वयुद्ध एक प्रतिशोधात्मक युद्ध था। यह उस शृंखला की अंतिम कड़ी था जो फ्रांसीसी क्रान्ति के साथ शुरू हुई थी। फ्रांसीसी क्रान्ति ने नेपोलियन को जन्म दिया। उसने पूरे यूरोप को रौंद डाला। फ्रांसीसी सेना जहां भी जाते-राष्ट्रवाद का संदेश-साथ में जाता। नेपोलियन ने खुद कहा था कि उसने यूरोप की सोई स्वतन्त्रता की देवी को जगा दिया है। इसी राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत होकर सबसे पहले ग्रीस और उसके बाद अन्य देशों -जर्मनी और इटली- का एकीकरण हुआ। जर्मनी के एकीकरण के अंतिम चरण(1870-71) में जीत के मद में चूर बिस्मार्क ने फ्रांस की वर्साय के राजमहल में भारी बेइज्जती कर दी। इसके बाद जर्मनी से बदला फ्रांस का राष्ट्रीय फर्ज बन गया। उसके कलेजे को ठंड 1919 में वर्साय में सूद सहित जर्मनी से बदला लेने के बाद मिला और जर्मन प्रतिशोध की इसी लहर पर सवार होकर हिटलर ने अपनी मंजिल हासिल की।

*पर युद्ध के कारणों का इतना ज्यादा सरलीकरण सही और उचित नहीं है।

- वर्साय की संधि: मूल कारण

- द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर नाजी पार्टी के मुख्य केंद्र न्यूरेम्बर्ग में युद्धापराध के लिए न्याधिकरण का गठन किया। नाजियों ने जिस तरह के घिनौने अपराध किए थे, उसके मुक़ाबले मात्र 11 लोगों को ही फांसी दी गई। सजा के इस बेहद निचले पैमाने को देखकर बहुत लोगों को भरोसा नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने देखा था कि इसी तरह युद्ध शुरू करने के लिए प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी को बहुत कड़ी सजा दी गई थी। निर्णायकों का मानना था कि एक सीमा से आगे जाकर किसी पराजित देश के साथ ज़्यादती करने से प्रतिशोध की शृंखला उत्पन्न हो जाती है, जैसा कि जर्मनी में हो चुका था। इससे पराजित देश को विजेता देश से बदला लेने का नैतिक आधार मिल जाता है। अब आखिर सवाल उठता है कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी के साथ क्या सलूक किया गया था?

Big Four-चार कर्ताधर्ता

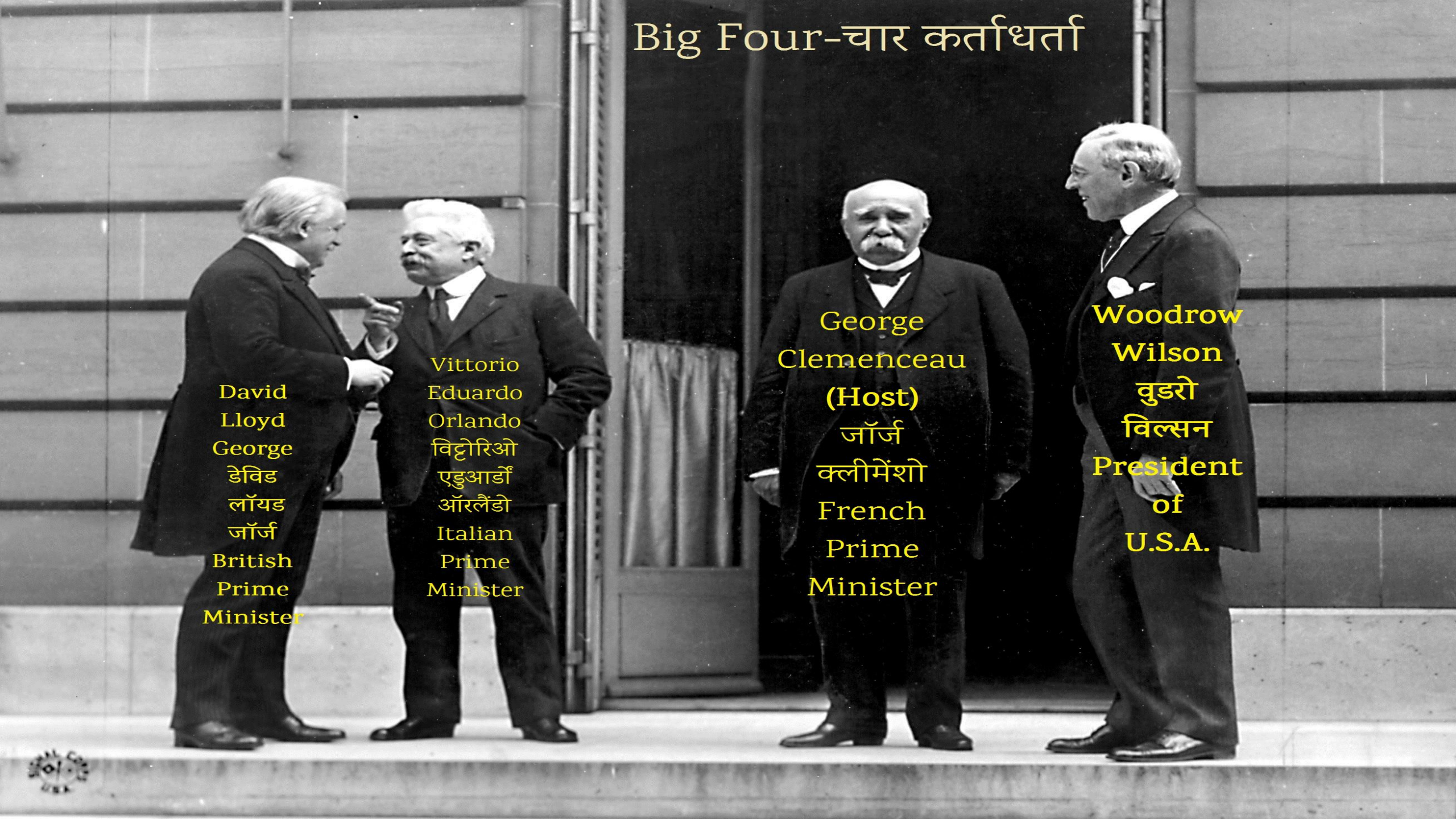

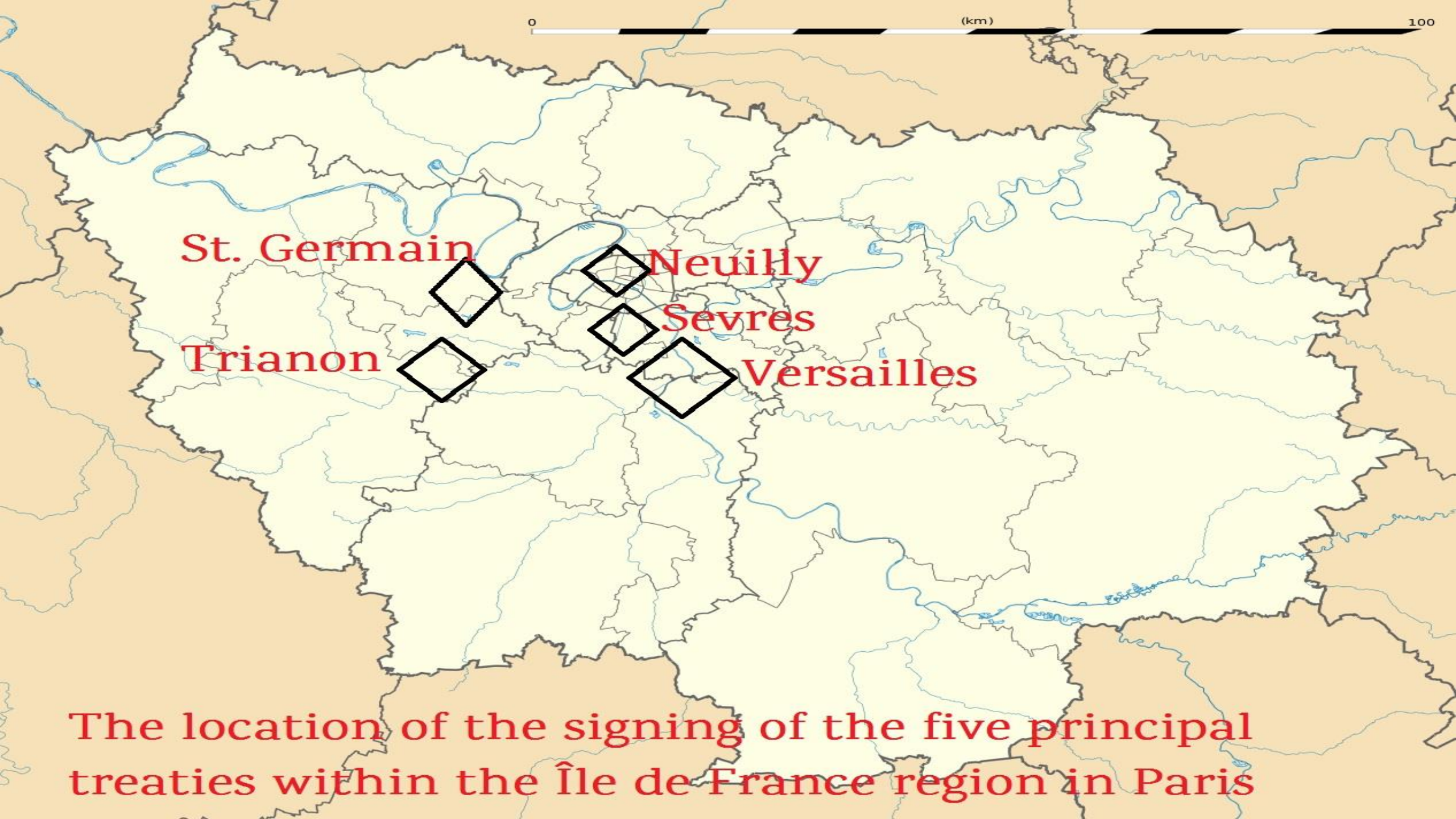

The location of the signing of the five principal treaties within the Île de France region in Paris

Johannes Bell of Germany is portrayed signing the peace treaties on 28 June 1919 in The Signing of Peace in the Hall of Mirrors by Sir William Orpen.

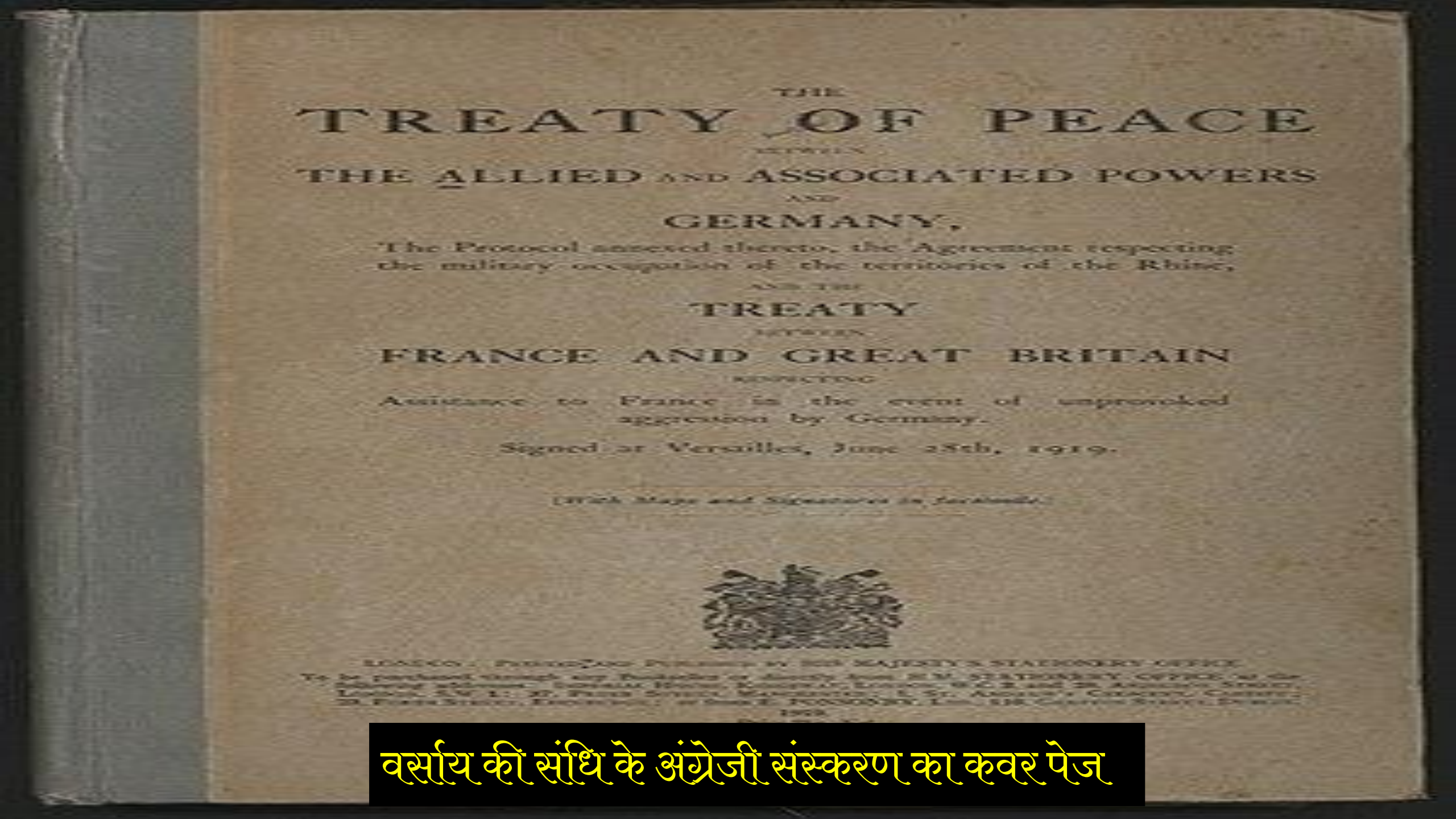

THE

TREATY OF PEACE

BETWEEN

THE ALLIED AND ASSOCIATED POWERS

AND

GERMANY,

The Protocol annexed thereto, the Agreement respecting the military occupation of the territories of the Rhine,

AND THE

TREATY

BETWEEN

FRANCE AND GREAT BRITAIN

RESPECTING

Assistance to France in the event of unprovoked aggression by Germany.

Signed at Versailles, June 28th, 1919.

(With Maps and Signatures in facsimile.)

LONDON: PRINTED AND PUBLISHED BY HIS MAJESTY'S STATIONERY OFFICE.

वर्साय की संधि के अंग्रेजी संस्करण का कवर पेज

पेरिस के वर्साय पैलेस में 28 जून 1919 का दृश्य

- पेरिस शांति सम्मेलन में अनेकानेक संधियों एवं समझौतों का मसविदा तैयार किया गया और उन पर हस्ताक्षर किये गये, लेकिन इन सभी संधियों में जर्मनी के साथ जो वर्साय की संधि हुई वह अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है और सभी संधि में प्रमुख है। चार महीने के परिश्रम के बाद संधि का मसविदा तैयार हुआ। 230 पृष्ठों में अंकित यह संधि 15 भागों में विभक्त थी और उसमें 440 धाराएँ थीं। 6 मई, 1919 को यह सम्मेलन के सम्मुख पेश हुई और स्वीकृत हो गयी। 30 अप्रैल को ही विदेश-मंत्री काउन्ट फॉन ब्रौकडौफ रान्टाजु के नेतृत्व में जर्मन प्रतिनिधि-मण्डल वर्साय पहुंचा।

- प्रतिनिधियों को ट्रयनन पैलेस होटल में ठहराया गया। मित्रराष्ट्रों के अफसर उनकी सुरक्षा की देखभाल कर रहे थे। होटल को काँटेदार तारों से घेर दिया गया था और जर्मन प्रतिनिधियों को मनाही कर दी गयी थी कि वे मित्रराष्ट्रों के किसी प्रतिनिधि या किसी पत्रकार से किसी प्रकार का सम्पर्क रखें। 7 मई को क्लिमेशों ने अन्य प्रतिनिधि-मण्डलों के समक्ष, ट्रयनन होटल में, जर्मन प्रतिनिधि मण्डल के सम्मुख संधि का मसविदा प्रस्तुत किया। इस मसविदे पर विचार-विमर्श करने के लिए उन्हें केवल दो सप्ताह का समय दिया गया।

- जर्मनी को किसी भी तरह संधि पर हस्ताक्षर करना ही था। जर्मन राजनीतिज्ञों ने गंभीरता के साथ संधि के मसविदे पर विचार किया और 26 दिनों के बाद अपनी तरफ से साठ हजार शब्दों का एक विरोधी प्रस्ताव प्रस्तुत किया। जर्मनी ने इस बात की शिकायत की थी कि उसने जिन शर्तों पर आत्मसमर्पण किया था, प्रस्तावित संधि में उन सिद्धांतों का उल्लंघन हुआ है। उनका कहना था कि जर्मनी की नयी सरकार पूर्ण रूप से प्रजातांत्रिक है और राष्ट्रसंघ की सदस्यता के लिए इच्छुक है। निरस्त्रीकरण की शर्त केवल जर्मनी पर ही नहीं, अपितु समस्त राज्यों पर लागू की जानी चाहिए। विश्वयुद्ध के लिए एकमात्र जर्मनी को जिम्मेदार ठहराना गलत है। जर्मन प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि संधि की सभी शर्तों को मानना असंभव है। एक बड़े राष्ट्र को कुचलकर तथा उसे गुलाम बनाकर स्थायी शांति स्थापित नहीं की जा सकती।

- मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी के प्रस्तावों पर विचार किया और कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन के बाद जर्मनी को पांच दिनों के भीतर ही संशोधित संधि पर हस्ताक्षर करने को कहा गया। इस बार जर्मनी को यह अवसर नहीं दिया गया कि वह संधि के मसविदे के संबंध में किसी प्रकार का संशोधन या निवेदन प्रस्तुत कर सके। मित्रराष्ट्रों ने स्पष्ट कर दिया था कि हस्ताक्षर नहीं करने का अर्थ जर्मनी पर पुनः आक्रमण होगा। अंत में जर्मन सरकार ने संधि पर हस्ताक्षर करना स्वीकार कर लिये।

वर्साय की संधि के प्रावधान

वर्साय की संधि के बाद जर्मनी के क्षेत्रों का विभाजन :

- लीग ऑफ नेशन्स द्वारा शासित भूभाग
- जर्मनी से छीनकर पड़ोसी राज्यों को दिया गया भूभाग
- वाइमर जर्मनी (Weimar Germany)

प्रादेशिक व्यवस्था

- **एल्सस-लॉरेन प्रदेश :** वर्साय-संधि द्वारा प्रादेशिक परिवर्तन करके जर्मनी का अंग-भंग कर दिया गया। 1871 में जर्मनी ने फ्रांस से एल्सेस-लॉरेन के प्रदेश छीन लिये थे। सबों ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया कि यह एक गलत काम हुआ था और इसका अंत आवश्यक है। अतः संधि की शर्तों के द्वारा एल्सस-लोरेन के प्रदेश फ्रांस को वापस दे दिये गये।

- **राइनलैंड :** फ्रांस की सुरक्षा की दृष्टि से जर्मनी के राइनलैण्ड में मित्र राष्ट्रों की सेना 15 वर्षों तक रहेगी तथा राइन नदी के आस-पास के क्षेत्र को स्थाई रूप से निःशस्त्र कर दिया जाए ताकि जर्मनी किसी प्रकार की किलेबंदी न कर सके।

Netherlands
Germany
Belgium
France

- **सार क्षेत्र :** सार क्षेत्र जर्मनी में कोयला क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध था। इस प्रदेश की शासन व्यवस्था की जिम्मेवारी राष्ट्रसंघ को सौंप दी गई किन्तु कोयले की खानों का स्वामित्व फ्रांस को दिया गया। यह भी तय हुआ कि 15 वर्षों बाद जनमत संग्रह द्वारा निश्चित किया जाएगा कि सार क्षेत्र के लोग जर्मनी के साथ रहना चाहते हैं या फ्रांस के साथ। यदि सारवासी जर्मनी के साथ मिलने की इच्छा प्रकट करें तो जर्मनी फ्रांस को निश्चित मूल्य देकर खानों को पुनः खरीद ले।
- **बेल्जियम एवं डेनमार्क की प्राप्ति :** यूपेन मार्शनेट और मलमेडी का प्रदेश बेल्जियम के अधीन कर दिया गया। श्लेशविग में जनमत संग्रह करके उसका उत्तरी भाग डेनमार्क को दे दिया गया।

- **जर्मनी की पूर्वी सीमा :** जर्मनी को सबसे अधिक नुकसान पूर्वी सीमा पर उठाना पड़ा। मित्र राष्ट्रों ने स्वतंत्र पोलैण्ड राज्य के निर्माण का निर्णय किया। डान्जिंग को स्वतंत्र नगर के रूप में परिवर्तित किया गया और उसे राष्ट्र संघ के संरक्षण में रख दिया गया। पोलैण्ड को समुद्री मार्ग देने के लिए डाजिंग के बंदरगाह का उपयोग करने का अधिकार दिया गया। मेमेल का बंदरगाह जर्मनी से लेकर लिथुआनिया को दे दिया गया। जर्मनी ने चेकोस्लोवाकिया के राज्य को मान्यता दी। इस प्रकार प्रादेशिक व्यवस्था के तहत जर्मनी को 25 हजार वर्ग मील का प्रदेश और 70 लाख की आबादी खोनी पड़ी।

- **जर्मन उपनिवेश संबंधी व्यवस्था :** मित्र राष्ट्र जर्मन उपनिवेशों को अपने-अपने साम्राज्य में मिलना चाहते थे किन्तु विल्सन ने इसका कड़ा विरोध किया। विल्सन के विरोध के कारण मित्र राष्ट्रों ने संरक्षण प्रणाली की शुरुआत की। इसका आशय यह था कि जो देश बहुत पिछड़े हुए है उनका समुचित कल्याण व विकास करना। सभ्य राष्ट्रों में पवित्र धरोहर के रूप राष्ट्रसंघ की ओर से इसकी उन्नति के लिए दिया जाना चाहिए। Mandate व्यवस्था के तहत जर्मनी को अपनी सभी उपनिवेश छोड़ने पड़े और उन्हें मित्र-राष्ट्रों के संरक्षण में रखा गया। प्रशांत महासागर के कई द्वीपों तथा अफ्रीकी महादेशों में स्थित उपनिवेश जर्मनी को खोने पड़े।

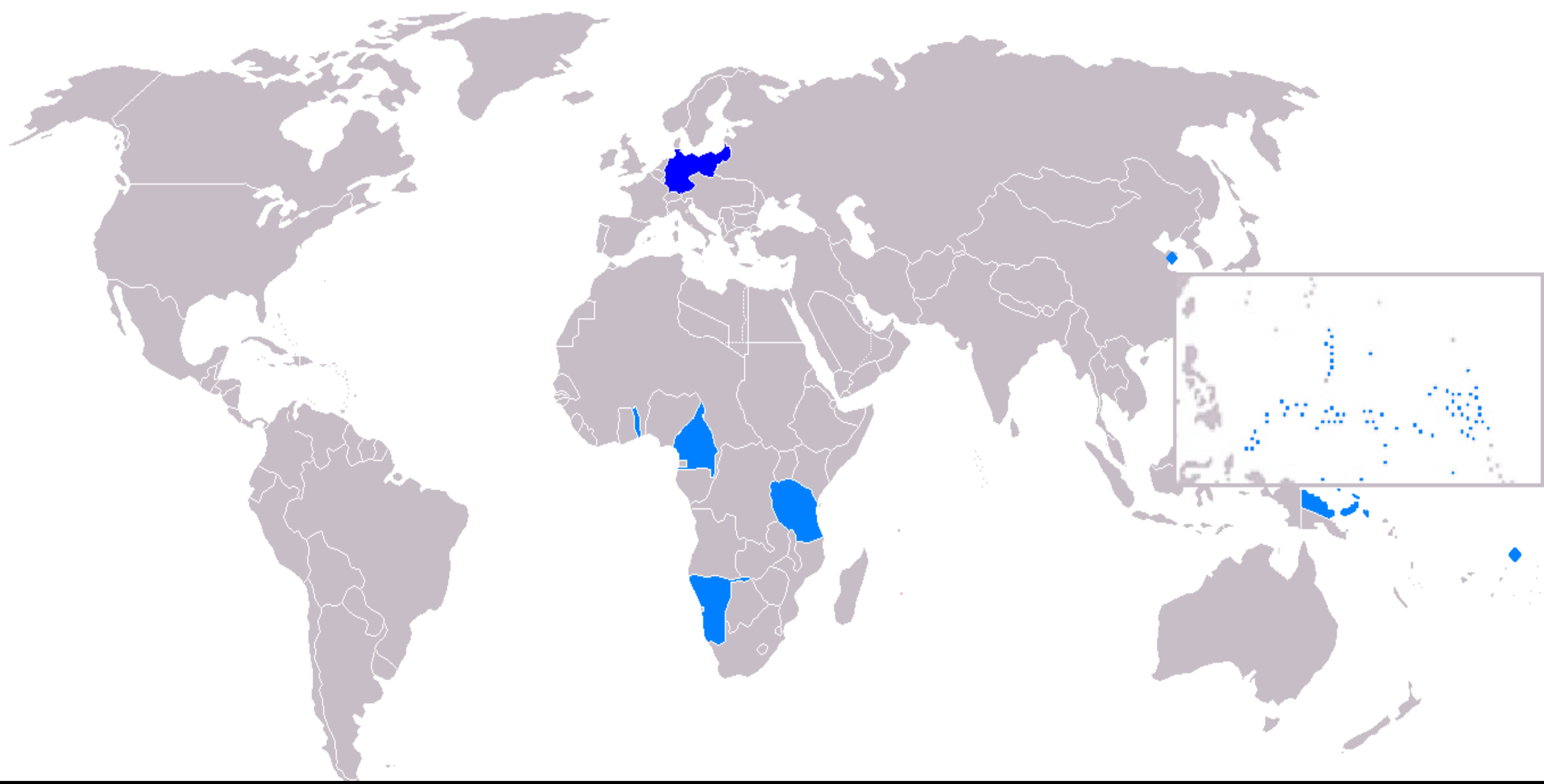

जर्मनी को अपनी मुख्य भूमि के कुछ हिस्से के साथ दुनिया भर के उपनिवेशों को त्यागना पड़ा

AUSTRIA-HUNGARY
FROM ONE EMPIRE TO MANY NATIONS
Austria-Hungary in 1914
Current political boundaries
Current national capitals
0 60 120 mi
0 90 180 km
GERMANY
LUX.
Luxembourg
POLAND
Prague
CZECH REPUBLIC
UKRAINE
Danube R.
SLOVAKIA
Bratislava
Vienna
MOLDOVA
Kishinev
Bern
Vaduz
SWITZ.
AUSTRIA
Budapest
AUSTRIA-HUNGARY
HUNGARY
Ljubljana
SLOVENIA
Zagreb
ROMANIA
CROATIA
Danube R.
ITALY
BOSNIA AND HER.
Belgrade
Bucharest
Sarajevo
SERBIA
Adriatic Sea
BULGARIA
Black Sea
MONT.
Pristina
Sofia
Podgorica
KOS.
Skopje
MACE.
Tirana
TURKEY
GREECE
ALBANIA
© Encyclopædia Britannica, Inc.

सैनिक व्यवस्था

- जर्मन सेना की अधिकतम संख्या एक लाख कर दी गई। **अनिवार्य सैनिक सेवा** पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हवाई जहाजों को प्रतिबंधित कर दिया गया। इसके अतिरिक्त नौसेना शक्ति को भी सीमित कर दिया गया। जर्मनी की नौसेना के केवल 6 युद्धपोत रखने की इजाजत दी गई। पनडुब्बियों को मित्र राष्ट्रों को सौंपने की बात की गई। निःशस्त्रीकरण की इस व्यवस्था का पालन करवाने तथा निगरानी रखने के लिए जर्मनी के खर्च पर मित्र राष्ट्रों का एक सैनिक आयोग स्थापित किया गया। इस प्रकार सैनिक दृष्टि से जर्मनी को पंगु बना दिया गया।

जर्मन हथियारों को नष्ट करते हुए सैनिक

आर्थिक व्यवस्था

- वर्साय संधि की 231वीं धारा के तहत जर्मनी व उसके सहयोगी राज्यों को युद्ध के लिए एक मात्र जिम्मेदार माना गया। अतः मित्रराष्ट्रों को युद्ध में जो क्षतिपूर्ति उठानी पड़ी थी, उसके लिए जर्मनी को क्षतिपूर्ति करने को कहा गया कि 1921 तक जर्मनी 5 अरब डालर मित्रराष्ट्रों को दे। मित्र राष्ट्रों को जर्मनी से कुछ वस्तु के आयात-निर्यात पर विशेष सुविधाएं दी गई। कील नहर का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर उसे सभी जहाजों के लिए खुला छोड़ दिया गया।

नैतिक दायित्व: संधि की 231वीं धारा के अनुसार सारी क्षति और युद्ध के लिए जर्मनी को उत्तरदायी ठहराया गया।

- **राजनैतिक व्यवस्था:** राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रसंघ की स्थापना वार्साय की संधि का महत्वपूर्ण अंग थी। विल्सन के प्रभाव के कारण ही राष्ट्रसंघ की धाराओं को वार्साय की संधि में रखा गया। राष्ट्रसंघ का उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सुरक्षा को कायम करना था।

संधि का मूल्यांकन

- विश्व इतिहास में हुई अनेक संधियों में वर्साय की संधि सर्वाधिक वर्णित और विवादित रही है। वस्तुतः इस संधि ने विश्व इतिहास की धारा को गहरे रूप से प्रभावित किया। इन संधि की तीव्र आलोचना की जाती है और इस द्वितीय विश्वयुद्ध के बीज के रूप में समझा जाता है। निम्न बिंदुओं के तहत इस संधि की आलोचना को देखा जा सकता है-

1. आरोपित संधि :

- वार्साय की संधि को “एक लादी गई शांति” की संज्ञा अर्थात् “आरोपित संधि” के नाम से जाना जाता है। संधि को तैयार करते समय सम्मेलन में जर्मनी को स्थान नहीं दिया गया। यह मित्र राष्ट्रों का आदेश था जिसे स्वीकार करने के अतिरिक्त जर्मनी के समक्ष कोई दूसरा उपाय नहीं था। जर्मन प्रतिनिधियों के द्वारा शिकायत करने पर भी उन्हें धमकी दी गयी की यदि वे (जर्मनी) पांच दिन के अंदर संधि पर हस्ताक्षर नहीं करता है तो उसके खिलाफ पुनः आक्रमण कर दिया जायेगा। अतः जर्मनी के मन में यह बात बैठ गई कि यह आरोपित संधि है जिसे मानने के लिए वह बाध्य नहीं है। यही वजह है कि जर्मनी ने आगे चलकर संधि प्रावधानों को ठुकरा दिया।

2. जनसाधारण की शांति नहीं, राजनयिकों की शान्ति :

- वर्साय की संधि में उल्लेखित प्रावधान जनसाधारण के हित और आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सके। इसमें कई ऐसी प्रादेशिक व्यवस्थाएँ थी जिसमें संशोधन की जरूरत थी। क्षतिपूर्ति में कई ऐसे प्रावधान किए गए थे जो यूरोप के औद्योगिक पुनर्जीवन को विनाशकारी आघात पहुचाए बिना वसूल नहीं किए जा सकते थे। इस तरह जनसाधारण की शांति का यह संधि पूरा नहीं करती।

3. कठोर एवं अपमानजनक शर्तें

- वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी को छिन्न-भिन्न कर दिया गया, उपनिवेश छीन कर आर्थिक रूप से पंगु बना दिया गया, आर्थिक संसाधनों पर दूसरे राष्ट्रों का स्वामित्व स्थापित कर दिया गया और सैनिक दृष्टि से उसे अपंग बना दिया गया। क्षतिपूर्ति की शर्त अत्यंत कठोर एवं अपमानजनक थी। क्षतिपूर्ति की रकम अदा न करने की स्थिति में जर्मनी के क्षेत्रों पर कब्जा करने की बात की गई। वस्तुतः विजेता राष्ट्र ने प्रतिशोध के तहत कठोर शर्तों को जर्मनी पर लादा। संधि की शर्ते इतनी कठोर थी कि कोई भी स्वाभिमानी, सुसंस्कृत राष्ट्र इसे सहन नहीं कर सकता था। चर्चिल के शब्दों में "इसकी आर्थिक शर्तें इस हद तक कलंकपूर्ण तथा निर्बुद्ध थी कि उन्होंने ने इसे स्पष्टतया निरर्थक बना दिया।"

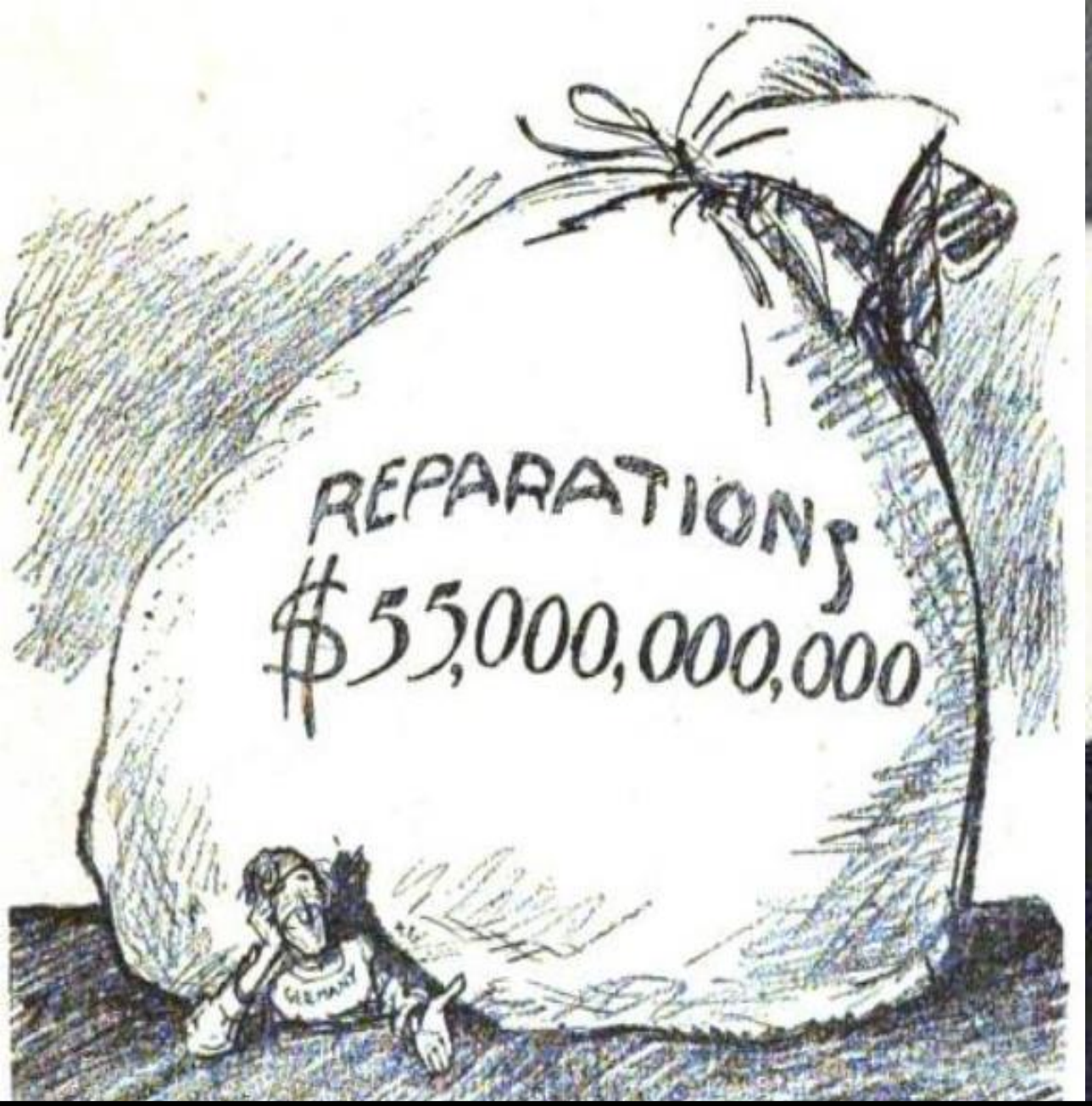

ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मीनार्ड कीन्स ने वारसाय संधि की शर्तों को कार्थेजीयन बताया जो जर्मनी को बर्बाद कर देगा।

जर्मनी ने वर्साय की बेइज्जती की याद बनाए रखनी की सर संभव कोशिश की-कहीं हम भूल न जाएँ।

- वर्साय की संधि के तहत लगे आर्थिक दंड को चुकाने में जर्मनी को 91 साल लगे। जर्मनी ने इस दंड की आखिरी किश्त 2 अक्टूबर 2010 को चुकाई। संधि के तहत जर्मनी पर पहले 269 अरब गोल्ड मार्क आर्थिक दंड लगा था, जिसे 1929 में घटाकर 112 अरब गोल्ड मार्क (42 हजार टन सोने की कीमत के बराबर) कर दिया गया। वैश्विक आर्थिक संकट के चलते 1931 में जर्मनी को सालाना किश्त चुकाने में राहत दी गई लेकिन जब 1933 में हिटलर को सत्ता मिली तो उसने आर्थिक दंड चुकाने से साफ इनकार कर दिया।
- 20 साल बाद बकाया भुगतान चुकाने के लिए 1953 में लंदन में एक नया समझौता हुआ, जिसके तहत पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के एक होने तक कुछ भुगतानों को सस्पेंड कर दिया गया। इस दौरान बाकी भुगतान पश्चिमी जर्मनी भर रहा था। 1990 में जब जर्मनी फिर एक हुआ, तो बकाया भुगतान चुकाना शुरू हुआ। हालांकि 1990 में जर्मनी पर बकाया भुगतान का कुछ अंश और माफ कर दिया गया।

4. संधि गलत स्थानों पर कठोर तथा गलत तरीके से नरम थी :

- यह संधि केवल असामान्य रूप से कठोर नहीं थी, वरन् गलत स्थानों पर कठोर तथा गलत तरीके से नरम थी। तथाकथित युद्ध अपराध संबंधी प्रावधानों जर्मनी द्वारा स्वीकृत कराने का प्रयत्न यथार्थ से परे था क्योंकि जैसा डेविड थामसन ने कहा "इस बात का उल्लेख ऐसे मसौदे में शामिल करके जिस पर हस्ताक्षर करने के लिए जर्मन प्रतिनिधि विवश किए गए कि उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न नहीं कर सकते थे।" दूसरे क्षतिपूर्ति की मांग भी असंभव मात्रा में की गई थी और इसकी वृहत् राशि बिना किसी गंभीर विचार किए निश्चित की गई थी।

- आर्थिक दृष्टि से यह संपदा जर्मनी के लिए चुकाना तथा मित्र राष्ट्रों के लिए प्राप्त करना कैसे संभव होगा, इसका विश्लेषण नहीं किया गया था। निःसंदेह दण्ड और मुआवजे का संपूर्ण आकार अविवेकी और अव्यवहारिक था। उपर्युक्त सभी प्रकार की अनावश्यक कठोरताएं जर्मनी के राष्ट्रीय असंतोष व क्रोध को अभिव्यक्ति करने की उसकी क्षमता के विरुद्ध कोई पृथक कदम नहीं उठाया गया। यह संधि गलत तरीके से नरम थी, 'सार क्षेत्र' का राष्ट्र संघ द्वारा 15 वर्ष तक शासन और 1935 में उसे जर्मनी का लौटा देना शायद ही उचित था। राइनलैण्ड पर 15 वर्ष तक मित्र राष्ट्रों का अधिकार भी खोखला सिद्ध हुआ।

5. **प्रतिशोधात्मक संधि** :विजेता राष्ट्रों ने प्रतिशोधात्मक रवैया अपनाकर कठोर शर्तों को जर्मनी पर लादा। फ्रांस अपनी पुरानी पराजय और अपमान का बदला लेना चाह रहा था उस दृष्टि से संधि में जर्मनी के साथ अधिकतम कठोर प्रावधान किये गए।

- 6. **वाइमर गणतंत्र के प्रति घृणा** : युद्ध के बाद जर्मनी में वाइमर गणतंत्र की स्थापना हुई और उसे वार्साय की संधि से जोड़कर देखा गया। तमाम उदारवादी विशेषताओं के बीच इसे शत्रु पक्ष द्वारा स्थापित संस्था माना गया। इसलिए जर्मनी में प्रजातंत्र आरंभ से ही द्वन्द्व, घृणापात्र व शत्रुपक्ष की व्यवस्था बन गया।

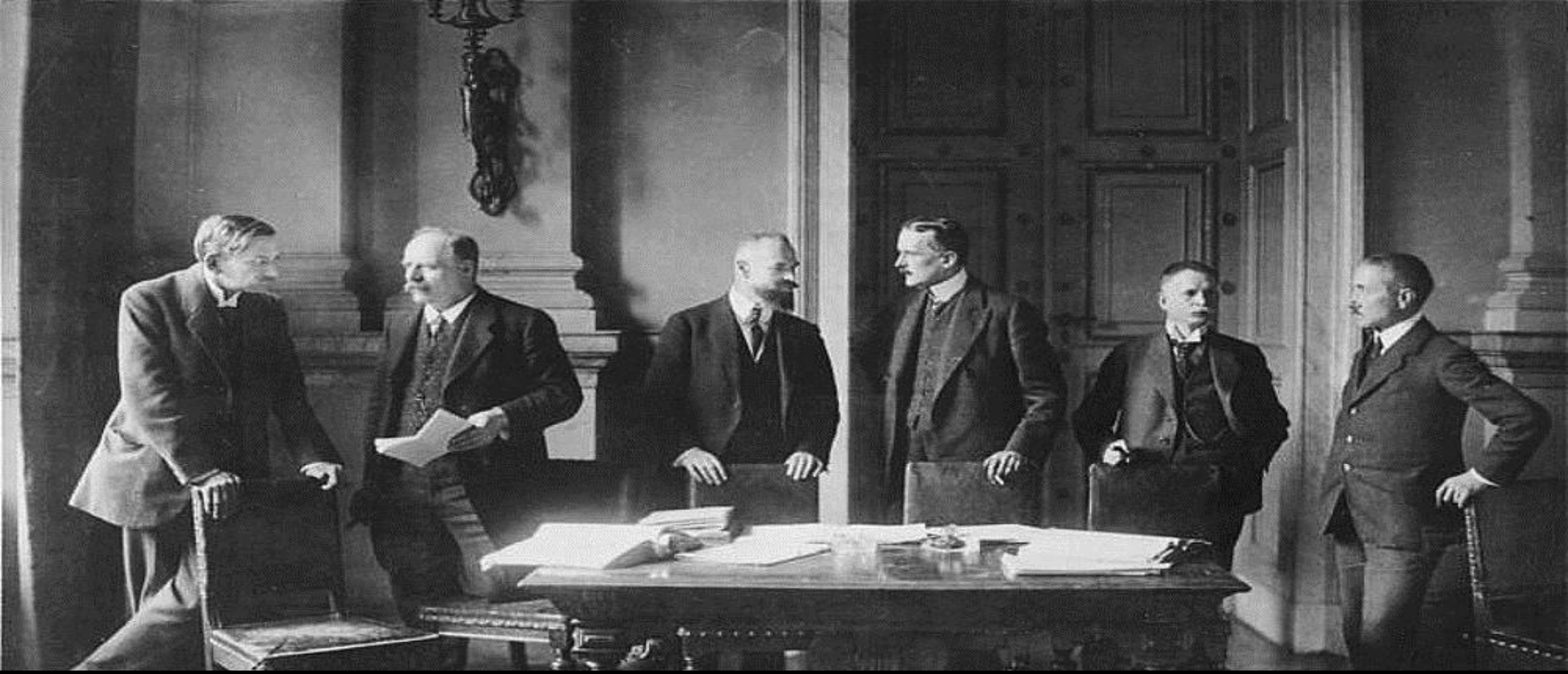

वर्साय में जर्मन प्रतिनिधिमंडल-प्रो. वाल्टर शुकिंग, राईख मंत्री जोहान्स गिसबर्ट्स, न्यायमन्त्री ओट्टो लैण्ड्सबर्ग, विदेशमंत्री उलरिच ग्राफ वॉन ब्रोकडोर्फ, प्रशा के राज्याध्यक्ष रॉबर्ट लिनर्टवित्तीय सलाहकार कार्ल मेलकॉयर

जर्मन संसद के सामने वर्साय की संधि का व्यापक विरोध हुआ।

7. अपमानजनक संधि :

- यह संधि जर्मनी के लिए राष्ट्रीय अपमान का कारण थी। कैसर विलियम की अपदस्थता, भारी क्षति पूर्ति राशि की वसूली। मित्र राज्यों का जर्मन तटों, कारखानों, नदियों आदि पर अधिकार और सेनाओं की जर्मनी में उपस्थिति, जर्मनी का विभाजन, उपनिवेशों की मित्र देशों द्वारा लूट तथा भेदभावपूर्ण, असमान,अन्यायपूर्ण शर्तें अदि सभी अपमानजनक तो थे ही। संधि पत्रों पर हस्ताक्षर के लिए आने वाले जर्मन प्रतिनिधियों के साथ क्लेमेंशो का अभद्र व्यवहार, उन्हें कैदियों के सामान रखना, जनता द्वारा गालियाँ, सड़े हुए फल, ईंटे, पत्थर को उन पर फेकना आदि प्रतिनिधियों का अपमान नहीं बल्कि जर्मनी का अपमान था।

8. विश्वासघाती संधि :

- वर्साय की संधि नैतिक दृष्टि से अनुचित व जर्मनी के साथ विश्वासघात मानी गई। जर्मनी ने विल्सन के 14 सूत्रों के आधार पर युद्ध कर संधि करना स्वीकार किया था लेकिन वार्साय की संधि में विल्सन के इन सूत्रों का खुलेआम उल्लंघन हुआ था। जर्मनी के साथ राष्ट्रीयता के सिद्धांत का पालन नहीं हुआ था। उस पर बहुत सी शर्ते लाद दी गई थी। लेकिन विजेताओं को उससे मुक्त रखा गया है। विल्सन के तीसरे सूत्र के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की समस्त रूकावटे दूर करने का प्रयत्न करना था, किन्तु जर्मनी की सामूहिक स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं थी। उसका अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वर्षों तक मित्रराष्ट्रों के नियंत्रण में रहा। 14 सूत्रों में सभी राष्ट्रों के शस्त्रों के कमी करने का सुझाव दिया गया था, किन्तु मित्र राष्ट्रों ने अपने शस्त्रों में कमी किए बिना जर्मनी की सैनिक शक्ति को अत्यंत सीमित कर दिया। मित्र राष्ट्रों ने विल्सन के 14 सूत्रों का पालन उसी सीमा तक किया जहाँ तक उन्हें लाभ था। इस तरह वार्साय की संधि में जर्मनी के साथ विश्वासघात किया गया। इस विश्वासघात का बदला लेने के लिए आगे जर्मनी ने युद्ध किया।

- जनरल फॉच ने तो संधि- पत्र के निर्माण के समय ही कह दिया था कि- **वर्साय की संधि, संधि न होकर 20 वर्षों का एक विराम काल है।** चर्चिल के अनुसार **"इस संधि की आर्थिक शर्तें इस हद तक कलंकपूर्ण तथा निर्बुद्ध थी कि उन्होंने ने इसे स्पष्टतया निरर्थक बना दिया।"**
- विश्व इतिहास के जिन संधियों और उनके प्रभावों की सर्वाधिक चर्चा हुई है, उनमें वर्साय की संधि का विशिष्ट स्थान है। संक्षेप में कहा जाता है कि वर्साय की संधि मित्र राष्ट्र द्वारा बदले की भावना से जर्मनी पर थोपी गई थी। इसलिए ऐसा माना जाता है कि वर्साय की संधि में दूसरे महायुद्ध के बीज बो दिये गए थे।

- लेकिन.....?

- अक्सर देखा गया है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के के कारण के तौर पर इतिहास की अधिकांश किताबों में वर्साय की संधि का जिक्र मिलता है, जिसमें जर्मन पर इसकी शर्तों के अध्यारोपण का भरपूर वर्णन होता है। लेकिन फ्रांस ने जर्मनी पर इतनी कड़ी शर्तें क्यों लादीं, इसकी पृष्ठभूमि का जिक्र न के बराबर रहता है। इतिहास कोई घटना मात्र नहीं हुआ करता, यह तो घटनाओं के एक सिलसिले के रूप में सदैव गतिमान रहा करता है।

- लुई-14वां फ्रांस राजा हुआ करता था। उसके समय का कोई यूरोपियन राजा उससे मुक़ाबला नहीं कर सकता था। सब पर जीत हासिल करने के बाद वह शांति से जीवन बिताना चाहता था, लेकिन उसे हर वक्त सामंतों के विद्रोह काडसताता रहता था। इससे निजात पाने के लिए उसने अपने मंत्रियों से सलाह-मशविरा किया। सुरा और सुंदरियों की अपनी फ्रेंच परंपरा के अनुकूल ही उसके मंत्रियों ने सलाह दी कि एक ऐश-ओ-आराम से भरपूर महल बनवाये जहां सुरा और सुंदरियों की मुफ्त में उपलब्धता हो। इसी सलाह के अनुरूप उसने राजधानी पेरिस से 20-25 किमी दूर वर्साय नामक एक जगह पर शानदार राजमहल बनाया, जहां छोटी-बड़ी हर राजसी सुख-सुविधा का बाजाब्ता इंतजाम था। राजा वहीं पर अपने सामंतों के साथ रहने लगा। इतिहास गवाह है कि इस महल के बनने के बाद किसी भी फ्रेंच सामंत ने कभी विद्रोह नहीं किया। ये तो तृतीय एस्टेट और मध्यम वर्ग के लोग थे जिन्होंने 1789 में क्रान्ति कर दी। क्रान्ति हो, चाहे नेपोलियन आए, वर्साय के राजमहल का रूतबा कभी फीका नहीं हुआ। फ्रेंच संस्कृति और राजनीति इसी के इर्द-गिर्द नाचती रही। इसमें घाटी हर घटना पर लोगों की टकटकी लगी रहती थी।

- इसी राजमहल का सबसे विशिष्ट कक्ष था-शीशमहल। (भारतीय राजमहलों में इसी तर्ज पर रंगमहल का विधान है-शायद)। इस कक्ष में 1871 में बिस्मार्क ने जर्मन साम्राज्य की घोषणा की थी और पूरे फ्रांस को घुटने टेकने पर मजबूर किया था। इतने से ही बिस्मार्क का दिल नहीं भरा, फ्रांस को जलील करने के लिए उससे अल्सेस और लोरेन का प्रांत छिन लिया। एक भारी हरजाने की राशि थोप दी गई, जिससे चुकता होने तक जर्मन सेनाएँ फ्रांस में मौजूद रखी गईं। समझौते पर हस्ताक्षर करने वक्त फ्रेंच प्रतिनिधियों के पीछे बिस्मार्क तलवार लेकर खड़ा था।

शीशमहल-वार्साय पैलेस का अतिविशिष्ट कक्ष

18 जनवरी 1871 को बिस्मार्क ने शीशमहल में ही जर्मन साम्राज्य की घोषणा की थी।

Jules Favre scellant le Traité de Francfort (1871), avec la Bague que lui avait donnée Naundorf.

Ci-contre la Photographie de ce Sceau, prise spécialement au Ministère des Affaires Étrangères.

बिस्मार्क फ्रैंकफर्ट संधि के दस्तावेज पर फ्रेंच विदेशमंत्री जूल्स फेव्री को राजकीय मोहर मारता हुए घूर रहा है।

- इन नज़ारों ने फ्रांसीसी राष्ट्र पर गहरा असर डाला। यह फ्रांस शुरू से यूरोपियन राष्ट्रों में सबसे ज्यादा गर्वीला और रोबीला रहा है। बेशक अंग्रेजी के लेखकों को सबसे ज्यादा साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला हो, पर ब्रिटेन से ज्यादा फ्रांस के लोगों को साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला है। यहाँ तक कि 1901 में जब पहली बार इन पुरस्कारों का ऐलान किया गया तो पहले साहित्यकार के रूप में फ्रेंच लेखक सूली प्रूधों का नाम था। अपने साम्राज्य पर ब्रिटेन का प्रभाव निर्विवाद था, पर मुख्य भूमि यूरोप में फ्रांस का बोलबाला था। उसके बनाए हर पैमाने को पूरे यूरोप में माना जाता था। अंग्रेजों के खिलाफ सौ वर्षीय लड़ाई में 1431 में ही फ्रेंच लड़की जॉन ऑफ ऑर्क मशहूर हो चुकी थी। उसके क्रान्ति के आदर्श पूरे विश्व में मान्य थे। राष्ट्रीय प्रतीकों के रूप में-राष्ट्रमाता, राष्ट्रीय झण्डा, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय चिह्न-सब उसी के देन रहे थे। यहाँ तक कि फ्रांस ने ही एकीकरण से पूर्व के जर्मन राज्यों में राष्ट्रवाद का संदेश फैलाया था। उस फ्रांस के साथ बिस्मार्क ने ऐसा कुत्सित व्यवहार किया। इसने फ्रांस को न भरने वाला जख्म दे दिया।

प्रशा के हाथों मिली करारी शिकस्त से शोक और गहरी निराशा में डूबे अपने देश में आशा के संचार के लिए पियरे शॉनेज़ ने 1872 में “आशा” नामक एक पेंटिंग बनाई जिसमें सफेद रंग का गाउन पहनी एक लड़की हाथ में एक टहनी लिए आशा और शांति का सन्देश दे रही थी।

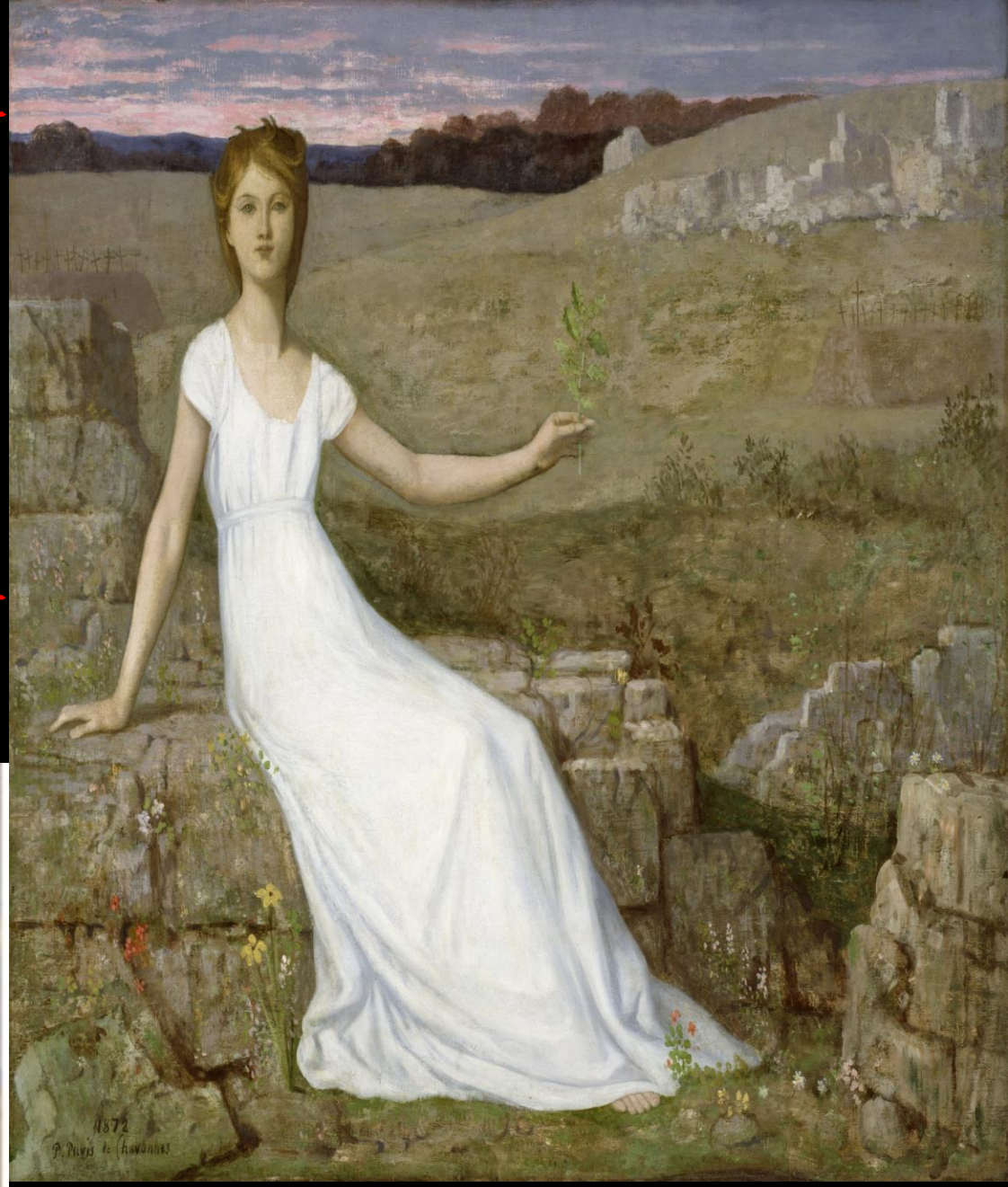

पियरे शॉनेज़ की दूसरी पेंटिंग “सपना”-1883

- इस के बाद फ्रांस लगातार प्रतिशोध की ज्वाला में जलता रहा। इस राष्ट्रीय बेइज्जती को न भूलने देने के लिए वहाँ के राजनेताओं के साथ-2 साहित्यकारों, चित्रकारों और कलाकारों ने हर संभव कोशिश की। प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत के समय फ्रांस के राष्ट्रपति रहे रेमंड पोअनकेयर ने अपनी जीवनी में लिखा था, "मेरा पूरा जीवन इस राष्ट्रीय बेइज्जती का बदला लेने में बीता। " राग-रागिनियों और सुरा-सुंदरियों के रसिया फ्रेंच कलाकारों ने भी अपनी भरपूर भूमिका अदा की। **पियरे शॉनेज** नामक फ्रेंच चित्रकार ने अपने निराश लोगों में आशा के संचार के लिए "Hope" नामक चित्र बनाया।
- 1870 से लेकर 1919-तकरीबन 50 सालों के इसी प्रतिशोध की स्पष्ट छाप जर्मनी के साथ की गई वर्साय की संधि पर पड़ी।

SUGGESTED READINGS:

- 1. F.LEE BENNS — EUROPE SINCE 1914
- 2. A.J.P. TAYLOR — ORIGINS OF THE SECOND WORLD WAR
- 3. E.M.BARNS — WESTERN CIVILIZATION (VOL-III)
- 4. E.H. CARR — INTERNATIONAL RELATIONS BETWEEN THE WORLD WARS-1919-1939
- 5. NORMAN LOWE — MASTERING MODERN WORLD HISTORY
- 6. G.M.S. HARDY — SHORT HISTORY OF INTERNATIONAL AFFAIRS 1920-1939
- 7. S.N. DHAR — INTERNATIONAL RELATIONS & WORLD POLITICS SINCE 19119
- 8. PARTHA SARTHI GUPTA — EUROPE KA ITIHAS, BHAG-II
- 9. LAL BAHADUR VERMA — EUROPE KA ITIHAS, BHAG-II
- 10. DEVENDRA SINGH CHAUHAN — SAMKALEEN EUROPE, BHAG-II
- 11. C. WOODROFF — MODERN WORLD
- 12. M. MARRIOT — INTERNATIONAL RELATIONS BETWEEN THE TWO WORLD WARS

जरा हट के! पेरिस शांति सम्मेलन में भारत की तरफ से भारतमंत्री एडविन मोंटेग्यू के साथ बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने भी शिरकत की थी-1919